19-04-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-12-09 मधुबन

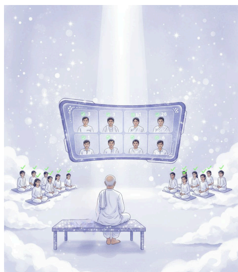

“ परिवार के साथ प्रीत निभाने के लिए नॉलेजफुल बन बाप समान साक्षीपन की स्थिति में रहना है , (1) बाप , (2) स्व , (3) ड्रामा और (4) परिवार चारों में निश्चयबुद्धि बन विजयी बनना है "

(1)
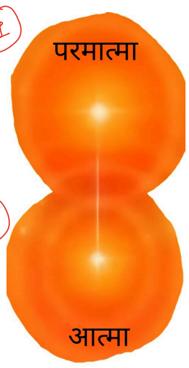

(3)

ड्रामा

(4)
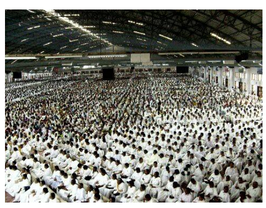

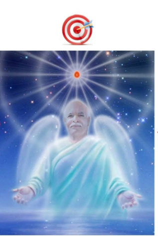

बाप समान

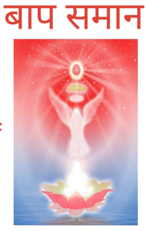

Double पूजा

(1)

(2)
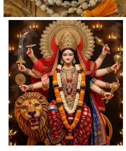

आज समर्थ बाप अपने समर्थ बच्चों को देख रहे हैं क्योंकि हर एक बच्चा स्नेह से बाप समान बनने का पुरुषार्थ बहुत लगन से कर रहे हैं। बापदादा बच्चों को देख खुश होते हैं और दिल में बच्चों के गीत गाते हैं वाह बच्चे वाह! क्योंकि बच्चे बाप के भी सिर के ताज हैं। देखो बच्चों की पूजा डबल रूप में होती है, V/S बाप की पूजा एक रूप में होती है। तो बच्चे बाप से भी बाप द्वारा आगे जाते हैं इसलिए बाप बच्चों के पुरुषार्थ को देख खुश है। नम्बरवार तो हैं लेकिन पुरुषार्थ का लक्ष्य आगे बढ़ा रहे हैं।

नाज उठाते हमें बिठाते, आप तो अपने कंधों पर
याद-प्यार दे करते नमस्ते, बली-बली जाते बच्चों पर
ऐसे प्यार का मधुरस पी के, सब रस लगते फीके हैं
मीठे बच्चे मीठे बच्चे बोल ये कितने मीठे है
मीठा हमे बनाते बाबा, आप बड़े ही मीठे है

किन शब्दों में आपका धन्यवाद करे...
दिन रात की ये सेवा हम याद करे..

(3)
कहु कपि रावन पालित लंका। केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन बिगत अभिमाना॥3॥
भावार्थ
हे हनुमान! बताओ तो, रावण के द्वारा सुरक्षित लंका और उसके बड़े बाँके किले को तुमने किस तरह जलाया? हनुमान जी ने प्रभु को प्रसन्न जाना और वे अभिमानरहित वचन बोले- ॥3॥

साखामग कै बड़ि मनुसाई। साखा तें साखा पर जाई॥
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा। निसिचर गन बधि बिपिन उजारा॥4॥
भावार्थ
बंदर का बस, यही बड़ा पुरुषार्थ है कि वह एक डाल से दूसरी डाल पर चला जाता है। मैंने जो समुद्र लाँघकर सोने का नगर जलाया और राक्षसगण को मारकर अशोक वन को उजाड़ डाला,॥4॥

सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई॥5॥
भावार्थ
यह सब तो हे श्री रघुनाथजी! आप ही का प्रताप है। हे नाथ! इसमें मेरी प्रभुता (बड़ाई) कुछ भी नहीं है॥5॥

ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभावँ बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल॥33॥
भावार्थ
हे प्रभु! जिस पर आप प्रसन्न हों, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आपके प्रभाव से रूई (जो स्वयं बहुत जल्दी जल जाने वाली वस्तु है) बड़वानल को निश्चय ही जला सकती है (अर्थात् असंभव भी संभव हो सकता है)॥33॥

Always remember this..

Just like हनुमानजी

(1)
प्रसंग: जब हनुमानजी लंका से लौटकर रामजी को सीताजी का समाचार देते हैं, तब प्रभु प्रेम से उन्हें उठाने के लिए अपना हाथ उनके सिर पर रखते हैं।

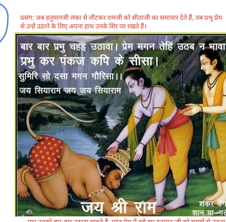

प्रभु उनको बार-बार उठाना चाहते हैं, परंतु प्रेम में डूबे हुए हनुमान जी को चरणों से उठना सुहाता नहीं। प्रभु का करकमल हनुमान जी के सिर पर है। उस स्थिति का स्मरण करके शंकरजी प्रेममग्न हो गए॥1॥

(2)
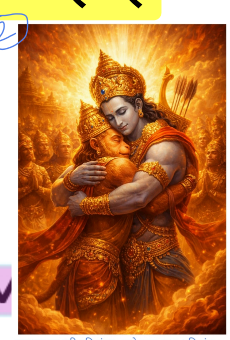

सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर॥
कपि उठाई प्रभु हृदयँ लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा॥2॥
भावार्थ
फिर मन को सावधान करके शंकरजी अत्यंत सुंदर कथा कहने लगे- हनुमान जी को उठाकर प्रभु ने हृदय से लगाया और हाथ पकड़कर अत्यंत निकट बैठा लिया॥2॥

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M

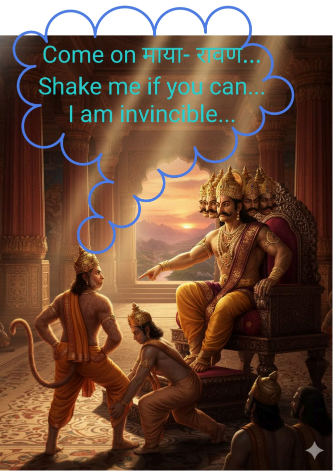

1

आज अमृतवेले चारों ओर के बच्चों में एक बात जो ज्ञान का फाउण्डेशन है वह देखा। फाउण्डेशन है निश्चय। कहा हुआ भी है निश्चयबुद्धि विजयी। तो आप सबका निश्चय देखा, सभी का नम्बरवार बाप में तो निश्चय है ही, उसकी निशानी सभी बाप को पहचान बाप के बने हैं और यहाँ भी बाप से मिलने के लिए आये हैं। बाप में हर एक बच्चे का अटूट निश्चय है लेकिन बाप के साथ और भी निश्चय पक्का होना चाहिए - वह है स्व में निश्चय। साथ में ड्रामा में निश्चय और परिवार में निश्चय। इन चार प्रकार के निश्चय में पक्के होना अर्थात् निश्चयबुद्धि विजयन्ती बनना। तो चेक करो कि इन चार निश्चय में पक्के हैं? बाप में तो सभी कहते हैं मेरा बाबा और मैं बाप की। बाप को मेरा कहकर बाप का पूरा अधिकार प्राप्त कर लिया। सदा बाप के द्वारा अधिकारी बन सर्व खजानों के अधिकारी बन गये।

2

साथ में स्व में भी निश्चय जरूरी है क्यों? अगर स्व में निश्चय नहीं है तो दिलशिकस्त बन जाते हैं। स्व में निश्चय यही है कि मैं बाप द्वारा स्वमानधारी हूँ, स्वराज्य अधिकारी हूँ। स्वयं बाप ने मुझे कितने स्वमान दिये हैं। एक एक स्वमान को स्मृति में लाओ तो कितना नशा चढ़ता है! आजकल किसी को भी कोई टाइटल मिलता है तो वह भी अपना

Swamaan
Note it down
For Revision
It's mandatory
समझा?
Mind well

भाग्य समझते हैं। लेकिन आप बच्चों को एक-एक स्वमान किसने दिया! स्वयं बापदादा (भगवान & आदि पिता ब्रह्मा) ने हर बच्चे को स्वमानधारी बनाया है। एक-एक स्वमान को याद करते खुशी में उड़ते हो। तो स्व में भी सदा निश्चय का इतना नशा रहे कि "मैं बाप द्वारा स्वराज्य अधिकारी, स्वमान अधिकारी कोटो में कोई आत्मा हूँ।" जैसे बाप में निश्चय है तो साथ में स्व में भी निश्चय आवश्यक है क्योंकि अगर स्व में निश्चय है तो जहाँ निश्चय है वहाँ हर कर्म में निश्चयबुद्धि अर्थात् स्वमानधारी विजयी है। (Formula) निश्चय का अर्थ ही है सफलता। ऐसे नहीं कि हमारा तो बाप में निश्चय है, बाप में है वह तो बहुत अच्छा लेकिन बाप के साथ स्व का नशा भी आवश्यक है, मैं कौन! (Action:-) एक-एक स्वमान को याद करो तो (Result:-) निश्चय और नशा आपके चलन और चेहरे से दिखाई देगा। दे रहा है और दिखाई देता रहेगा।

3

साथ में तीसरी बात - ड्रामा में भी निश्चय बहुत जरूरी है क्योंकि ड्रामा में समस्यायें भी आती हैं और सफलता भी होती है। अगर ड्रामा में पक्का निश्चय है तो ड्रामा के निश्चय से जो निश्चयबुद्धि है वह समस्या को समाधान स्वरूप में बदल देता है क्योंकि (Formula) निश्चय अर्थात् विजय। तो किसके ऊपर विजयी बनता? परिवर्तन करने में, एक सेकण्ड में समस्या परिवर्तन हो

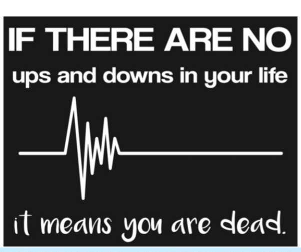

Revise and Realise it

4

समाधान रूप बन जाती है। हलचल में नहीं आयेंगे, अचल रहेंगे क्योंकि ड्रामा के ज्ञान से अडोल अचल बन जाते हैं। यह निश्चय रहता है कि मैं ही कल्प पहले भी समाधान स्वरूप अर्थात् सफल आत्मा बना था, बनी हूँ और कल्प के बाद भी मैं ही बनूंगी। तो यह ड्रामा का निश्चय नशा पक्का कराता है, फखुर रहता है, नशा रहता है मैं थी, मैं ही हूँ और मैं ही बनूंगी इसलिए इस पुरुषार्थी जीवन में ड्रामा का निश्चय भी आवश्यक है और साथ में चौथा है परिवार का निश्चय क्योंकि बाप ने आते ही परिवार को पैदा किया। तो जैसे बाप में निश्चय है वैसे परिवार में भी निश्चय आवश्यक है क्योंकि परिवार (स्वयं भगवान का...) किसका है? और इतना बड़ा परिवार और किसका हो सकता है! तो परिवार में भी निश्चय अति आवश्यक है क्योंकि इतना बड़ा परिवार विश्व में किसका है? तो चेक करो कि आप जितना परिवार विश्व में किसी का है? परिवार की रीति से किसी भी डिवाइन फादर का भी नहीं है वहाँ फॉलोअर हैं, यहाँ परिवार है। परिवार के साथ ही सेवा में, सम्बन्ध में रहते हो। (God says:-) ऐसे नहीं कि हमारा तो बाप से ही कनेक्शन है, परिवार से नहीं हुआ तो क्या हुआ। परिवार का निश्चय तो आपका 21 जन्म चलना है। जानते हो ना! परिवार के साथ ही सम्बन्ध में आने

Don't become मियां मिट्ठू by violating God's श्रीमत by saying "मेरा बाबा के साथ तो connection है ना, परिवार से नहीं है तो क्या हुआ.."

मियां मिट्ठू

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

May I have your Attention Please..!

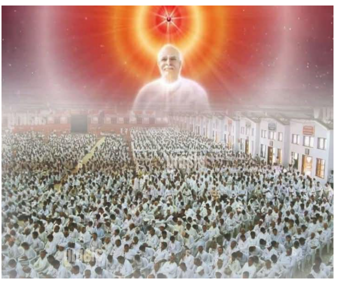

से मालूम होता है कि मैं इतने बड़े परिवार में सभी से निश्चयबुद्धि हो चल रहा हूँ, परिवार में चलने के लिए यह अटेन्शन देना पड़ता है कि परिवार में हर एक के संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और होंगे। आपका यादगार माला है, माला में देखो कहाँ एक नम्बर और कहाँ 108वां नम्बर क्योंकि परिवार में भिन्न-भिन्न संस्कार हैं। तो इतने बड़े परिवार में चलते संस्कारों को समझ एक दो में एक परिवार, एक बाप, एक राज्य, तो एक होके चलना है। परिवार में जैसे बड़ा परिवार है, ऐसे ही एक दो में बड़ी दिल, हर एक के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना की स्थिति में स्थित हो चलना है क्योंकि परिवार के बीच ही संस्कार स्वभाव आता है। लेकिन कोई समझे परिवार से क्या है, बाबा से तो है। लेकिन यहाँ धर्म और राज्य दोनों की स्थापना है, सिर्फ धर्म नहीं है, दूसरे जो भी धर्म पिता आये हैं उनका सिर्फ धर्म है, राज्य नहीं है, यहाँ तो आप सबको राज्य भी करना है। तो राज्य में परिवार की आवश्यकता होती है और 21 जन्म भिन्न-भिन्न रूप से परिवार के साथ ही रहना है, परिवार को छोड़ कहाँ जा नहीं सकते। तो चेक करो ऐसे नहीं समझना कि बाप जाने मैं जानूं। बाप से ही कार्य है लेकिन अगर इन

Mind very well...

m.m.m....imp.

Note it down

This Will Lead to Fail in Papers.

समझा?

Result Would be:-

Point to be Noted

God says:

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा .imp.

यह तो भक्ति मार्ग में अज्ञानी भी मानते हैं कि अपना अहम भाव त्याग देना चाहिए
तो हम ज्ञानियों को तो पक्का होना चाहिए कि भगवान के सामने अपना अहम कार नहीं दिखाना है

May I have your Attention Please..!

Don't become "महामूर्ख" by violating God's श्रीमत

चार निश्चय में से एक भी निश्चय कम है तो हलचल में आ जायेंगे। सेवा के साथी, बाप तो सकाश देने वाले हैं लेकिन साथी कौन? साकार में साथ तो परिवार का है तो बाप ने देखा है कि तीन निश्चय में मैजारिटी ठीक चल रहे हैं लेकिन परिवार के साथ में निभाना, संस्कार मिलाना, एक-एक को कल्याण की भावना से देखना और चलना, इसमें कई बच्चे यथाशक्ति बन जाते हैं। लेकिन बाप ने देखा कि जो परिवार के निश्चय में नॉलेजफुल होके सदा बाप समान साक्षीपन की स्थिति में रह सम्बन्ध में आते हैं, रहते हैं वही नम्बरवन या नम्बरवन डिवीजन में आते हैं। तो चेक करो भाव स्वभाव परिवार में होता है, तो छोटी-छोटी गलतियां भी होती हैं, विघ्न आते हैं वह परिवार के सम्बन्ध में ही आते हैं। तो सबसे आवश्यक इस परिवार के सम्बन्ध में पास होना है। अगर परिवार के साथ चलने में, तोड़ निभाने में कोई भी कमी होती है तो वह विघ्न छोटा हो या बड़ा हो लेकिन तंग करता है। यह क्यों, यह कैसे, परिवार के कनेक्शन में आता है। तो क्यों के बजाए, क्यों नहीं करना है, लेकिन हमें मिलकर चलना है, परिवार की प्रीत निभानी है क्योंकि यह बाप का परिवार है, भगवान का परिवार है। रिवाजी परिवार नहीं है। नशा रहना चाहिए कि वाह बाबा, वाह

Attention Please..!

Result

प्रश्न:-
नंबर वन कौन बनते है?

m.m.m....imp.

Note it down

Shiv भगवान उवाच:

ये तो सब होगा ही...

संगठन के साथ चलने वाला

संगठन के बिना चलने वाला "बाप जाने मैं जानू" Catagory

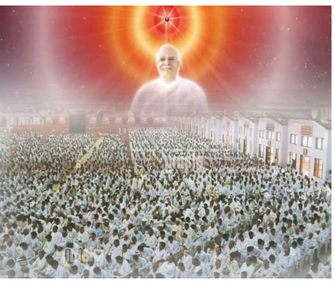

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

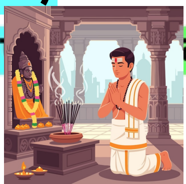

ये परिवार वही है जिसकी भक्ति मे तुम भगवान के बाद भगवान समझकर पूजा करते थे..

Point to be Noted

पुछो अपने आप से...

एक की भी कमी अर्थात fail

19-04-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-12-09 मधुबन

ड्रामा, वाह मैं और वाह परिवार! ठीक है? चेक करते हो? चार ही में पास हो? चार ही में? एक में भी कम नहीं। चेक करो। अभी-अभी चेक करो क्योंकि विजयी बनने का साधन ही यह है। परिवार के बीच संस्कार निकलते हैं और वह संस्कार मिलाना खुद को भी परिवर्तन करना और परिवार को भी इतनी ऊंची दृष्टि से देखना। बापदादा ने पहले भी कहा है कि बापदादा लास्ट बच्चे को भी अति भाग्यवान समझते हैं क्यों? भगवान को पहचानना, साधारण रूप में बाप को पहचानना, जो इतने बड़े-बड़े महात्मायें भी पहचान नहीं सके, लेकिन बापदादा का लास्ट बच्चा भी मेरा बाबा कहता है। दिल से मेरा बाबा कहते हैं। तो बापदादा जैसे लास्ट बच्चे की भी विशेषता देख, जैसे और बच्चों को लाड प्यार, यादप्यार देते हैं वैसे लास्ट वालों को भी देते हैं। तो चेक करो कि तीन में ठीक हो या चारों में ठीक हो या दो में ठीक हो या एक में ठीक हो? चेक किया? किया चेक? जो समझते हैं कि मैं चार ही निश्चय में बाप, आप, ड्रामा और परिवार, चार ही निश्चय में ठीक हूँ वह हाथ उठाओ। ठीक हैं? अच्छा ठीक हैं, पेपर लें? हाँ हाथ उठाओ। अच्छा परिवार में पास हो? परिवार के सम्बन्ध में

Subtle Point to understand

कहावत:
उज्जड गाँव में अरंडी प्रधान

कभी मन में था ना चीत में था
भगवान हमें मिल जाएंगे
विद्वान बड़े बुद्धिमान बड़े सब
ढूंढते ही रह जाएंगे
हम भोले भाले बच्चों को शिव
भोलानाथ करतार मिला
हमें आपसे बेहद प्यार मिला....

Self Checking

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

पुछो अपने आप से...

आना, क्योंकि परिवार को छोड़ तो कहाँ जायेंगे नहीं, रहना ही है, निभाना ही है। तो इसमें पास हो? कभी ऐसे आता है कि यह नहीं होता तो अच्छा होता, यह क्यों करते हैं, यह क्यों होता है, यह संकल्प आता है... एकदम परिवार का नशा, चार

Characteristics of

ही निश्चय वाला कभी भी ऐसे वैसे संकल्प में भी नहीं करेगा। संकल्प में आये भी कि ऐसे क्यों होता

है, लेकिन मुझे वह क्यों वा क्या हिलावे नहीं, मूड नहीं बदली करे, इसको कहते हैं चार ही में पास। हाथ तो उठाया, बापदादा को खुश किया है परन्तु बापदादा को यह जो परिवार की बात है उसमें कभी-कभी बातें सुननी पड़ती हैं, देखनी पड़ती हैं।

m.m.m....imp.

Homework

एकदम बड़ी दिल हो, सबको शुभ भावना, शुभ कामना से ठीक करना है, क्योंकि परिवार ही एक है। एकमत होके चलना और चलाना है। सिर्फ

Not only ... But also

चलना नहीं है, चलाना भी है इसलिए बापदादा इस

Attention..!

बात पर अटेन्शन दिला रहे हैं कि परिवार में जो किसी भी हलचल में पास हो जाते हैं, व्यर्थ नहीं चलता है, उन्हें दूसरों को ऐसा बनाना है। अभी तो

Example

आप अपने-अपने सेन्टर पर कितने रहते हो, चलो ज्यादा में ज्यादा 25-50, इतने होते नहीं हैं लेकिन मानों बड़े स्थान हैं, उसमें भी 50-60 अच्छा ज्यादा

में ज्यादा 100 भी समझो, इतने हैं नहीं लेकिन समझ लो, तो बापदादा ने सभी सेन्टर्स के बच्चों को लास्ट को भी अपना प्यारा कहके चलाया और प्यार की निशानी है रोज़ बापदादा यादप्यार क्या देता? मीठे मीठे, जानता है खट्टे भी हैं लेकिन मीठे खट्टे कभी यादप्यार में कहा है? उन्हों को भी लाडले कहता है, न सिर्फ कहता है लेकिन मेरा बच्चा है, मेरे भाव से चलाता है क्योंकि ड्रामा में, माला में सब एक नम्बर नहीं हैं, यह रिजल्ट है। संस्कार भिन्न-भिन्न होते हैं, होना है, नहीं तो सब राजा बन जायें, प्रजा कौन बनेगा! राज्य किस पर करेंगे? अच्छी प्रजा भी तो चाहिए, रॉयल प्रजा, राजधानी है ना। ऐसे हर एक अपने को चेक करे, परिवार में किसी भी बात में संस्कार खराब हैं, लेकिन मेरा संस्कार क्या? अगर खराब को देख मेरा संस्कार भी खराब हो गया, तो मैं भी तो खराब हो गया। खराब अच्छे को भी बदल लेता है।

Point to be Noted

Point to ponder deeply...

बाप ने स्थापना के समय 350-400 को इकट्ठा सम्भाला है, इतना तो अभी किसी का इकट्ठा रहने

वाला परिवार नहीं है। चलो, ड्यूटी अलग अलग है लेकिन वह ड्यूटी है और परिवार में ड्यूटी है। रिवाजी परिवार, रिवाजी ड्यूटी, रिवाजी रीति से दिनचर्या बिताना, यह नहीं है, न्यारा और प्यारा परिवार है। इसमें डिस्टर्ब होना, फिर बहाना तो यह देते कि इसने किया तब यह हुआ। यह किया तो यह हुआ, लेकिन बाप के आगे भी क्या

Experience of Sweet Brahma baba

आपोजीशन नहीं हुई! भागन्ती भी हुए ना! यह आपोजीशन नहीं है! लेकिन बाप ने फिर भी कहा, कोई भागन्ती भी हो गये तो भी टोली भेजो, उनको बुलाने की कोशिश करो, सर्विस करो, याद दिलाओ। ऐसे चार ही निश्चय में पास होना है वा तीन में, दो में? नम्बरवन होना है। इसके लिए

पुछो अपने आप से...

समझा,
क्यों विनाश रुका हुआ है...?

विनाश की तैयारियां होते भी अभी विनाश रूका हुआ है। प्रकृति भी बाप के पास आती है, प्रकृति भी कहती अब बहुत बोझ हो गया है। प्रकृति भी बोझ से छूटने चाहती है। माया भी कहती है कि मैं जानती हूँ कि मेरा पार्ट अभी जाने वाला है लेकिन ब्राह्मण परिवार में ऐसे भी बच्चे हैं जो छोटी बात में मेरे साथी बन जाते हैं। बिठा देते हैं मेरे को। तो

Result

अपना राज्य लाने में यह चार निश्चय परसेन्ट में हैं इसलिए समय भी रुक रहा है। बाकी माया और प्रकृति दोनों रेडी हैं। अब बताओ आर्डर करें? बच्चे

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

अगर एवररेडी नहीं हैं तो माया और प्रकृति को आर्डर करें? करें? हाथ उठाओ, तैयार हो? ऐसे नहीं हाथ उठाओ। पेपर आयेगा, आयेगा पेपर। एवररेडी?

बाप का रूप प्यारा है,
धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।
AV: 25/11/95

Don't Take it easy

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

अभी बापदादा की हर बच्चे में यही आशा है कि कैसे को मिटाके ऐसे करो। कैसे करूं, कैसे हो, नहीं। ऐसे हो। क्या करें नहीं, ऐसे करें। यह आश कब तक पूरी करेंगे? कितना टाइम चाहिए? क्योंकि सभी को तैयार होना है। अगर आप तैयार हो, हाथ उठाया, तो उन्हों का काम क्या है? एक दो को आप समान बनाना। अच्छा - बापदादा ने सभी समाचारों की रिजल्ट सुनी है, जो भी चला है, अच्छा चला और रिजल्ट भी अच्छी उमंग-उत्साह की रही है इसलिए अभी लक्ष्य रखो होना ही है, करना ही है, समाप्ति को समीप लाओ। आप थोड़े हिलते हो ना तो समाप्ति भी दूर हो जाती है। आपको ही समाप्ति को समीप लाना है क्योंकि राज्य करने वाले तैयार नहीं होंगे तो समय क्या करेगा? इसलिए सब बहाना, कारण, कारण शब्द को समाप्त करो। निवारण सामने लाओ क्योंकि आप सबका यही लक्ष्य है ना कि दु:खियों को

Now our Aim must be this

समझा?

Feel the Responsibility

Attention Please..!

Most imp

very Subtle Point to understand

ये पक्का समझ लो..

Homework

Point to be Noted

सन्देश दे मुक्त करें। उन्हों को मुक्त करने के बिना आप मुक्ति में जा नहीं सकते। तो इन्हों को मुक्त करो क्योंकि बाप आया है ना तो सारे विश्व के बच्चों को वर्सा तो देंगे ना। आपको जीवनमुक्ति का वर्सा देंगे लेकिन सभी बच्चे तो है ना। उनको भी वर्सा तो देना है ना। तो उन्हों का वर्सा है मुक्ति, आपका वर्सा है जीवनमुक्ति। जब तक मुक्ति नहीं देंगे तो आप भी जा नहीं सकते। इसके लिए 12 बारी फरिश्ते रूप की और 12 बारी निराकारी स्वरूप में स्थित होने की ड्रिल करो। रात और दिन के 24 घण्टे हैं और 24 बार यह ड्रिल करना है, नींद के टाइम, नींद भले करो। बापदादा यह नहीं कहते कि नींद नहीं करो। नींद करो लेकिन दिन में बढ़ाओ। जब कोई फंक्शन करते हो तो सारा सारा दिन काम करते हो ना। जागते हो ना! ऐसे इस ड्रिल के लिए भी समय निकालो। अच्छा।

धुन लगाओ...

चारों ओर के बाप के स्नेही, जो स्नेही होते हैं वह सहयोगी जरूर होते हैं, स्नेह का रिटर्न प्रत्यक्ष रूप वह हर कार्य में तन-मन-धन-जन में एक दो के सहयोगी जरूर होंगे। तो ऐसे स्नेही और सहयोगी

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Most imp

बच्चे, जो सदा बाप के प्यार में लवलीन रहने वाले हैं, लव में नहीं, लेकिन लवलीन रहने वाले और सदा बाप के सर्व कार्य में समय संकल्प लगाने वाले, क्योंकि संगमयुग में समय और संकल्प की बहुत वैल्यू है, एक जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध बनाने वाले, ऐसे तीव्र पुरुषार्थी हर गुण, हर शक्ति को, हर समय अनुसार कार्य में लगाने वाले ऐसे गुण सम्पन्न, शक्ति सम्पन्न बच्चों को बहुत-बहुत पदम पदम गुणा यादप्यार और नमस्ते।

See the तीव्रता

Method/Process/Instrument

19-04-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-12-09 मधुबन

वरदान:- विधाता के साथ - साथ वरदाता बन सर्व आत्माओं में बल भरने वाले रहमदिल भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

यदि कोई आत्मा इच्छुक है लेकिन हिम्मत न होने के कारण चाहना होते भी प्राप्ति नहीं कर सकती तो ऐसी आत्माओं के लिए विधाता अर्थात् ज्ञान दाता बनने के साथ-साथ रहमदिल बन वरदाता बनो, उन्हें अपनी शुभ भावना का एक्स्ट्रा बल दो।

**Conditions Applied

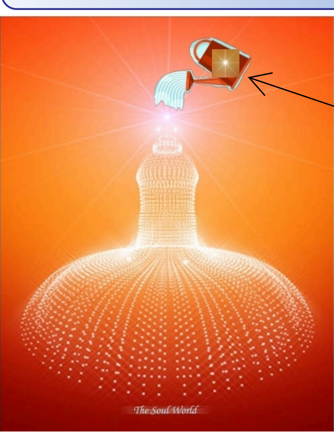

लेकिन ऐसे वरदानी मूर्त तभी बन सकते, जब आपका हर संकल्प बाप के प्रति कुर्बान हो। हर समय, हर संकल्प, हर कर्म में "वारी जाऊं" का जो वचन लिया है, उसे पालन करो।

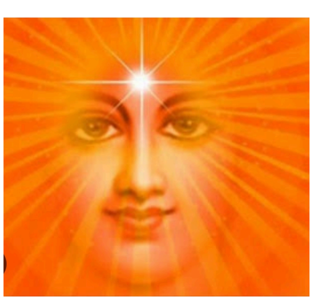

स्लोगन:- अपने सत्य स्वरूप की स्मृति हो तो सत्यता की शक्ति आ जायेगी।

Poir ... ोग धारणा सेवा M.imp.

बाप समान

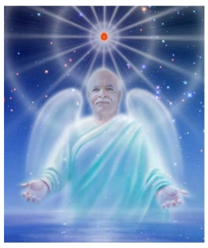

=

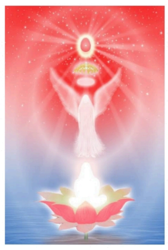

ये अव्यक्त इशारे -

महान बनने के लिए

मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

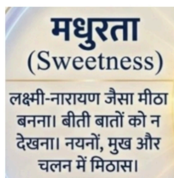

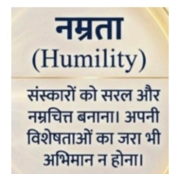

Call of time/समय की पुकार

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

बापदादा अब एक-एक बच्चे के मस्तक में सम्पूर्ण पवित्रता की चमकती हुई मणी देखने चाहते हैं।

रूहानियत से चमकते हुए नयन देखने चाहते हैं, बोल में मधुरता, विशेषता, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं और कर्म में सन्तुष्टता, निर्माणता सदा देखने चाहते हैं।

विशेष सूचना - मास के तीसरे रविवार का योग अभ्यास

आज मास का तीसरा रविवार है, सभी भाई बहिनें संगठित रूप में एकत्रित होकर सायं 6.30 से 7.30 बजे तक पूरे ग्लोब को सम्मुख इमर्ज कर पवित्रता के श्रेष्ठ वायब्रेशन देने की सेवा करें। चारों ओर के चिंता, भय और दु:ख के वायुमण्डल में अपने रहमदिल मास्टर दाता स्वरूप से शान्ति और शक्ति की सकाश फैलायें।

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

From Avyakt
Murli dtd :- 12/04/2026

Again & Again

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में

What is difference between

All Vardan of March'26

Click

All अव्यक्त इशारे of March'26

Click

इसके द्वारा आप बीच में कभी समय मिले तो Revise करके स्मृति स्वरूप बन सकते

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ।
स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।
AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

सर्वशक्तिमान ईश्वर को सिर्फ और सिर्फ प्रेम से ही हम अपना बना सकते हैं।

वरदान:- स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति को समाप्त करने वाले सम्पूर्ण ज्ञानी भव

स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है। स्नेह ब्राह्मण जन्म का वरदान है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा 12

11-12-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संगमयुग पर स्नेह का सागर स्नेह के हीरे मोतियों की थालियां भरकर दे रहे हैं, तो स्नेह में सम्पन्न बनो।

स्नेह की शक्ति से परिस्थिति रूपी पहाड़ परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन जायेगा। माया का कैसा भी विकराल रूप वा रॉयल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ। तो स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति समाप्त हो जायेगी।

Point to be Noted

या किनारा कर लेते हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा कि जो दिल के स्नेही हैं, बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही अवश्य होंगे। दिल का स्नेह बहुत सहज विधि है सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की। चाहे कोई कितना भी ज्ञानी हो, लेकिन अगर दिल का स्नेह नहीं है तो ब्राह्मण जीवन में रमणीक जीवन नहीं होगी। रूखी जीवन होगी क्योंकि ज्ञान में, स्नेह बिना अगर ज्ञान है तो ज्ञान में प्रश्न उठते हैं क्यों, क्या! लेकिन स्नेह ज्ञान सहित है तो स्नेही सदा स्नेह में लवलीन रहते हैं। स्नेही को याद करने की मेहनत करनी नहीं पड़ती। सिर्फ ज्ञानी है, स्नेह नहीं है तो मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाता, वह मुहब्बत का फल खाता। ज्ञान है बीज लेकिन पानी है स्नेह। अगर बीज को स्नेह का पानी नहीं मिलता तो फल नहीं निकलता है। ये पक्का समझ लो

Short cut

m.m.m.....Imp

Point to be Noted for life time

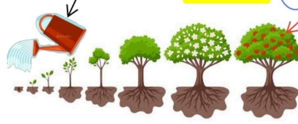

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

30/11/05

सुनाया था, मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है - दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना। आप

08-06-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-11-05 मधुबन

तो आज बापदादा सर्व बच्चों के दिल का स्नेह चेक कर रहे थे। चाहे बाप से, चाहे सर्व से। तो आप

उस सर्वशक्तिमान को हम अपने सच्चे प्रेम से ही प्राप्त कर सकते हैं नहीं तो चाहे कितना ही ज्ञान पढ़ ले लेकिन हम उस सर्वशक्तिमान को नहीं पा सकते। प्रभु की प्राप्ति का मूल मंत्र है उस सच्चे माशूक के प्रेम में डूब जाना।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ॥

अर्थात्:-

बड़ी बड़ी किताबे पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

- कबीर

Example

कार्तिकेय और गणेश दोनों ही शिव और पार्वती/ब्रह्मा माँ के बच्चे हैं लेकिन कार्तिकेय ज्ञान के आधार पर चलता है और गणेश ज्ञान और दिल के सच्चे प्रेम के आधार पर चलता है
इसलिए शास्त्रों में बताया है कि जब सारी सृष्टि का सात बार चक्कर लगाने की बात आई तो कार्तिकेय चक्कर ही लगाता रहा और गणेश ने अपने माता-पिता अर्थात शिव बाबा और ब्रह्मा माँ को ही अपनी सृष्टि मानकर उनके सात फेरे लगा लिए और कुछ ही पल में वह विजय हो गया।

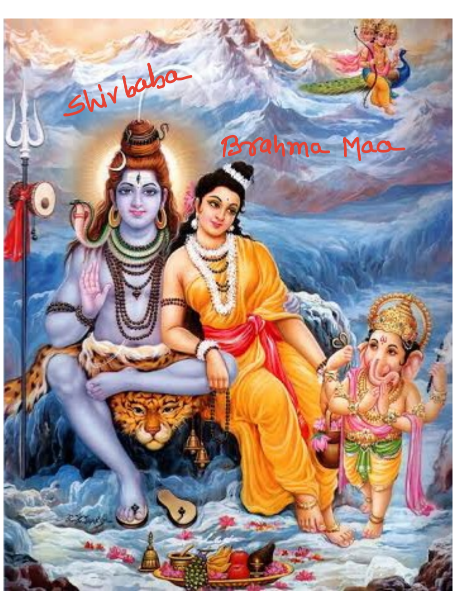

Example

जब यशोदा जी ने श्री कृष्ण को अपने अहंकार से बांधना चाहा तो सभी रस्सियाँ छोटी पड़ गई किंतु जब उन्होंने समर्पण भाव से प्यार की रस्सी में उनको बांधना चाहा तो श्री कृष्ण अपने आप ही बंध गए।

जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो,
वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरूषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो।
उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में पास हो उसको देखो।
जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं – ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा।

वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं,
तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं – सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्‌गुरू परन्तु
चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का।
यह भी एक विशेष सम्बन्ध है-आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई।
यह सम्बन्ध भी पुरूषार्थ को सहज कर देता है।

m.m.m. Imp

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वेसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं।
एक तो बाप के सम्बन्ध में-'फरमान वरदार',
शिक्षक के सम्बन्ध में-'इर्मानदार' और
गुरू के सम्बन्ध में-'आज्ञाकारी' और
साजन के सम्बन्ध में-'वफादार।'

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

AV- 21/7/73

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल की, फीमेल की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व- सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान् और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्ठा का कीड़ा ऐसे स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा टच कर सकता है? स्नेह दृष्टि दे सकता है? अर्ज़ी मान सकता है? कम्पलेन्ट व उलहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो, तो उसे भक्त आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। भक्त भी किसी युक्ति से अपनी वृत्ति को स्थिर करते हैं। तो मास्टर नॉलेजफुल भक्त आत्मा से भी नीचे गिर जाते हैं। तो क्या ऐसी आत्मा की कोई प्रजा बनेगी? जमादार की कोई प्रजा बनेगी क्या या वह स्वयं प्रजा बनेंगे?
AV- 11/07/74

In Short, बाबा को हम साजन तो बनाते ही है किंतु चु की वो भी आत्मा ही है तो सजनी भी बना सकते है....
क्योंकि आत्मा में विष्णु चतुर्भुज अर्थात male and Female दोनों के संस्कार विद्यमान है।

आज ये गीत समर्पित है - उस प्यारे शिव साजन को,
(आप चाहो तो सजनी भी बना सकते है।)
जिसमे बस उनको पाने की ही ख्वाहिश/धुन निहित हैं।

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल (male) की, फीमेल (female) की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व-सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान् और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्ठा का कीड़ा ऐसे स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा टच कर सकता

A.V. 11/7/74

¥¥¥¥====¥¥¥
Song from movie: tum mile (2009)

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun,
Tujhko Main Kar Loon Hasil Lagi Hai Yahi Dhun.
(ओ मेरे प्यारे बाबा,
आप मेरे दिल की धड़कनो को गौर से सुनो, जो की अब एक ही इबादत/ worship कर रहा हैं जिस में...
आप को पाने की अर्थात आप समान बनने की, आप में समाने की या यूं कहो कि आपकी श्रीमत पर चल, आपकी सर्व आशाओं को पूरा कर - आपको हाँसिल करने की जैसे की एक धुन सी लगी हैं।)

Zindgi Ki Shakh Se Loon Kuchh Hasin Pal me Chun
(इस हिरे तुल्य संगमयुग के सुहावने समय रूपी डाल से अब बाकी बचे जो कुछ पल(पत्ते) हैं, उन लम्हो को तुम्हारी ही यादों से और तुम्हारे साथ से अपने बना लूँ।)

link of the song
↓
Click

Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun
(तो बस, आपको हाँसिल करने की जैसे की एक धुन सी लगी हैं।)

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loon Hasil Lagi Hai Yahi Dhun
Zindgi Ki Shakh Se Loon Kuchh Hasin Pal me Chun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

Jo Bhi Jitne Pal Jeeyu
Unhe Tere Sang Jeeyu
Jo Bhi Kal Ho Ab Mera Use Tere Sang Jeeyu
Jo Bhi Saanse Main Bharoo Unhe Tere Sang Bharoo
Chahe Jo Ho Rasta Use Tere Sang Chalu

other songs to submerge in baba's love
↓
Click

(ओ मेरे सच्चे साथी,
अब इस संगम के जितने कुछ पल बचे हैं, वो हर एक पल मैं तुम्हारे साथ ही जीऊ,
आने वाला जो कल हैं उसे भी तुम्हारे साथ ही जीऊं,
इस शरीर की हर सांस जो चलती हैं वो सभी तुजसे combined रह कर ही भरूँ,
एवं
चाहे जो भी,जैसा भी अति अति अति दुर्गम रास्ता ही क्यों न हो जिसपे चाहे आग हो, शूल हो या फूल, in short कुछ भी....
बस...तुम्हारी श्रीमत पर तुम्हारे साथ ही चलूँ।)

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

#######
Mujhko De Tu Mit Jaane
Ab Khudse Dil Mil Jaane
Kyu Hai Yeh Itna Fasla....
(ओ मुज परवाने की समां...।
मुज परवाने को अब तुज पे मीट जाने की इज़ाज़त दे दो,
और तुम्हारे दिल से मेरे दिल को मिल जाने दो,
पता नही, क्यों अब तक भी इतना फांसला रहा हुआ है..?
क्योंकि तुम्हारे और मेरे बीच का ये फासला अब मुझसे सहन/बर्दास्त नहीं होता हैं।)

Lamhe Yeh Phir Naa Aane
Inko Tu Naa De Jaane
Tu Mujh Pe Khudko De Loota.....
(इस संगम के अति अति अति अमूल्य पल फिर सारे कल्प में कभी नहीं आने हैं, तो इन लम्हों को अब जाया/waste नहीं करने है।
तो अब इन फासलों को ख़त्म कर तुम अपने को मुज पर लूटा दो।)

Tujhe Tujhse Tod Loo Kahi Khudse Jod Loo
Mere Jism O Jaan Main Aa Teri Khusboo Odh Loo
(या फिर अब तो यही द्रढ़ संकल्प हैं की...
तुज को तुजसे ही तोड़ कर मुज से जोड़ दूँ अर्थात माया रावण को हरा कर, तुम पर जीत पा लूँ,
एवं मुज आत्मा में अब तुम्हारे प्यार एवं combined रूप के साथ की - खुशबु को सदा के लियें ओढ़ लूँ, जो किसी की संकल्प में भी हिम्मत न हो तुम्हे मुझसे और मुजे तुमसे अलग करने की।)

Jo Bhi Saanse Main Bharoo Unhe Tere Sang Bharoo
Chahe Jo Hona Rasta Use Tere Sang Chalu
Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

######
Bahoon Main De Bas Jaane
Sine Main De Chhup Jaane
Tujh Bin Main Jaaunga Kaha
(ओ मेरे प्यारे हमदम/हम सफर...,
तुम मुझे अपनी बाँहों में बस जाने/समा जाने की इज़ाज़त दो ,
या तुम्हारे दिलमें छुप जाने की (जैसे शिप में मोती) इज़ाज़त दे दो,
क्योंकि तुम्हारे अलावा अब मुझे इस जहान में कुछ दीखता ही नहीं।
तो तुम ही मुझे बताओ की अब मैं जाऊं तो जाऊं कहाँ...?)

Tujhse He Mujhe Ko Paane Yaado K Woh Nazrane
Ek Jinpe Haq Ho Bas Mera

(ओ मेरे सिकीलधे/Long lost and now found सच्चे साथी,
मुझे तुम्हारे साथ के अनुभवों की कुछ ऐसी तो सौगातें/ नज़राने प्राप्त करने हैं जिस पर सिर्फ और सिर्फ मेरा ही हक़ हो,

जिससे की मैं द्वापर से भक्तिमार्ग में, जब भी बिना पहचान के भी आपको याद करूँ तो आपके प्यार और आपके साथ की वही भासना मुजे मिले जो अभी इस समय संगम पर मुजे मिल रही हैं।)

Teri Yaado Main Rahoo
Tere Khwabo Main Jagoo

(मैं इतना तो तुम्हारी याद में खोया हुआ combined/ submerge रहूँ की,
मेरे ख्वाबो की तो बात छोड़ो परंतु तुमको भी तुम्हारे ख्वाबोमें अर्थात हर एक संकल्पमें मैं ही मैं दिखाई दूँ,
in short, तुम भी मुझे याद किये बिना एक पल भी रह न सकों।)

Mujhe Doondhe Jab Koi
Teri Aankho Main Milu

(और जब मुझे कोई भी ढूंढते हुऐ पूछे की मैं कहाँ मिलूँगा?

तो वह बिन सोचे, एक ही उत्तर दे की ...
उस अल्हड़ का तो बस एक ही ठिकाना हैं,
और वो हैं शिव सागर/ शिवबाबा की याद या आंखे...)

Jo Bhi Saanse Main Bharoo
Unhe Tere Sang Bharoo
Chahe Jo ho Rasta Use Tere Sang Chalu

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

Mind it...

जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो, वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरूषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो।
उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में पास हो उसको देखो।
जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं – ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा।

वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं,
तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं – सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्गुरू परन्तु
चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का।
यह भी एक विशेष सम्बन्ध है-आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई।
यह सम्बन्ध भी पुरूषार्थ को सहज कर देता है।

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वैसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं।
एक तो बाप के सम्बन्ध में-'फरमान वरदार',
शिक्षक के सम्बन्ध में-'इर्मानदार' और
गुरू के सम्बन्ध में-'आज्ञाकारी' और
साजन के सम्बन्ध में-'वफादार।'

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

AV- 21/7/73